Vagisha International Multidisciplinary Research Journal
(International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal)
Volume-01, Issue-03, June-2026| ISSN: 3139-2776 (online)
Available online at:https://vimrj.com/
DOI: https://doi.org/10.67185/vimrj.v1i3.23

# माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन

**पीयूष कान्त पाल[1], प्रो0 (डॉ0) मयानंद उपाध्याय[2]**

[1]**शोध छात्र,** शिक्षाशास्त्र विभाग, राजा श्री कृष्ण दत्त पी०जी० कालेज जौनपुर
[2]**शोध निर्देशक,** पूर्व विभागाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग, राजा श्री कृष्ण दत्त पी०जी० कालेज जौनपुर
e-mail- Piyushpal0386@gmail.com

**Received:** 05 May 2026 | **Accepted:** 13 May 2026 | **Published:** 25 June 2026

## सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का लिंग, विद्यालय के प्रकार तथा विद्यालय के परिवेश के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया तथा सामाजिक परिपक्वता मापनी के माध्यम से विद्यार्थियों से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण माध्य, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण की सहायता से किया गया। अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि छात्राओं का सामाजिक परिपक्वता स्तर छात्रों की अपेक्षा अधिक है। इसी प्रकार शहरी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों में सामाजिक परिपक्वता का स्तर ग्रामीण एवं सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा अपेक्षाकृत अधिक पाया गया। अध्ययन के निष्कर्ष विद्यालयी वातावरण, पारिवारिक सहयोग, सहपाठ्य गतिविधियों तथा सामाजिक–भावनात्मक अधिगम की भूमिका को सामाजिक परिपक्वता के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध करते हैं। यह अध्ययन शिक्षकों, अभिभावकों, विद्यालय प्रशासकों एवं शिक्षा–नीति निर्माताओं के लिए उपयोगी दिशा–निर्देश प्रदान करता है।

**मुख्य शब्द :** सामाजिक परिपक्वता, माध्यमिक शिक्षा, विद्यार्थी, सामाजिक विकास, सामाजिक–भावनात्मक अधिगम, तुलनात्मक अध्ययन।

## प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का प्रभावी माध्यम है। इसका उद्देश्य केवल ज्ञान एवं बौद्धिक क्षमताओं का विकास करना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों में ऐसे गुणों का निर्माण करना भी है जो उन्हें एक उत्तरदायी, संवेदनशील एवं सामाजिक नागरिक बनने में सहायता प्रदान करें। वर्तमान समय में जब समाज तीव्र गति से सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा तकनीकी परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है, तब विद्यार्थियों में सामाजिक परिपक्वता का विकास और भी अधिक आवश्यक हो गया है। सामाजिक परिपक्वता वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति सामाजिक मानदण्डों, मूल्यों एवं अपेक्षाओं के अनुरूप व्यवहार करने में सक्षम होता है। यह व्यक्ति की सामाजिक उत्तरदायित्व भावना, सहयोगात्मक दृ ष्टिकोण, आत्म–नियंत्रण, सहिष्णुता, नेतृत्व क्षमता, नैतिक निर्णय क्षमता तथा सामाजिक समायोजन की योग्यता को अभिव्यक्त करती है। सामाजिक रूप से परिपक्व विद्यार्थी विद्यालय, परिवार एवं समाज में स्वस्थ एवं संतुलित संबंध स्थापित करते हैं तथा सामूहिक कार्यों में सक्रिय भागीदारी निभाते हैं।

माध्यमिक स्तर की शिक्षा किशोरावस्था का प्रतिनिधित्व करती है, जो व्यक्तित्व निर्माण की दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील एवं निर्णायक अवस्था है। इस अवधि में विद्यार्थी अपने सामाजिक संबंधों का विस्तार करते हैं, आत्म–पहचान विकसित करते हैं तथा सामाजिक भूमिकाओं को समझना प्रारम्भ करते हैं। यदि इस अवस्था में उचित मार्गदर्शन, सकारात्मक विद्यालयी वातावरण एवं अनुकूल सामाजिक अनुभव उपलब्ध हों, तो विद्यार्थियों में सामाजिक परिपक्वता का प्रभावी विकास संभव हो सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 ने भी शिक्षा के उद्देश्य को केवल संज्ञानात्मक उपलब्धियों तक सीमित न रखते हुए विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों, सहयोग, सहानुभूति, संवेदनशीलता, नेतृत्व क्षमता, लोकतांत्रिक दृ ष्टिकोण तथा वैश्विक नागरिकता के विकास पर विशेष बल दिया है। इसके अतिरिक्त विद्यालयों में सहपाठ्य गतिविधियाँ, सामुदायिक सेवा कार्यक्रम, समूह–आधारित अधिगम तथा जीवन–कौशल आधारित शिक्षण को भी सामाजिक दक्षताओं के विकास का प्रभावी माध्यम माना गया है।

वर्तमान समय में डिजिटल तकनीक, सोशल मीडिया, एकल परिवार व्यवस्था, प्रतिस्पर्धात्मक जीवनशैली तथा बदलते सामाजिक परिवेश ने विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया है। इन परिवर्तनों के कारण विद्यार्थियों की सामाजिक सहभागिता, पारस्परिक संबंध, नैतिक निर्णय क्षमता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना में भी परिवर्तन देखने को मिल रहा है। ऐसी परिस्थितियों में यह जानना आवश्यक हो जाता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी सामाजिक परिपक्वता के किस स्तर पर हैं तथा लिंग, विद्यालय के प्रकार एवं विद्यालयी परिवेश के आधार पर उनमें किस प्रकार की भिन्नताएँ विद्यमान हैं।

## सम्बन्धित साहित्य का संक्षिप्त सर्वेक्षण

यादव एवं सिंह (2025) ने किशोरों की सामाजिक परिपक्वता पर सहपाठी समूह के प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य यह ज्ञात करना था कि मित्र समूह किशोरों के सामाजिक व्यवहार एवं सामाजिक विकास को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि सहपाठी समूह सामाजिक परिपक्वता, संचार कौशल, आत्मविश्वास एवं सामाजिक समायोजन के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जिन किशोरों के सहपाठी समूह सकारात्मक एवं सहयोगात्मक थे, उनमें सामाजिक परिपक्वता का स्तर अधिक पाया गया।

दहिया (2025) ने इंटरनेट उपयोग करने वाले 507 किशोरों की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य डिजिटल वातावरण एवं इंटरनेट उपयोग के सामाजिक विकास पर प्रभाव का परीक्षण करना था। अध्ययन में पाया गया कि अधिकांश किशोरों का सामाजिक परिपक्वता स्तर मध्यम था। परिणामों से यह भी ज्ञात हुआ कि इंटरनेट एवं सोशल मीडिया का उपयोग किशोरों के सामाजिक व्यवहार, संचार शैली एवं सामाजिक संबंधों को प्रभावित करता है। कुछ किशोरों में डिजिटल माध्यमों के कारण सामाजिक संपर्कों का विस्तार हुआ, जबकि कुछ में प्रत्यक्ष सामाजिक सहभागिता में कमी देखी गई।

श्रीवास्तव (2024) ने ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की सामाजिक परिपक्वता का तुलनात्मक समीक्षा अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य दोनों परिवेशों के किशोरों की सामाजिक परिपक्वता में अंतर का विश्लेषण करना था। समीक्षा से ज्ञात हुआ कि शहरी किशोरों में संचार कौशल, सामाजिक सहभागिता तथा सामाजिक अनुकूलन क्षमता अपेक्षाकृत अधिक विकसित थी। दूसरी ओर ग्रामीण किशोरों में पारस्परिक संबंध अधिक घनिष्ठ पाए गए, किंतु सामाजिक अनुभवों की विविधता अपेक्षाकृत कम थी। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश किशोरों की सामाजिक परिपक्वता को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण कारक है।

OECD (2023) ने सामाजिक एवं भावनात्मक कौशलों पर आधारित अपने अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि जिन विद्यालयों में सहयोगात्मक अधिगम, सकारात्मक विद्यालयी संस्कृति तथा जीवन–कौशल आधारित शिक्षण को प्राथमिकता दी जाती है, वहाँ विद्यार्थियों में सामाजिक परिपक्वता, आत्मविश्वास एवं उत्तरदायित्व की भावना अधिक विकसित होती है। अध्ययन में यह भी स्पष्ट किया गया कि सामाजिक–भावनात्मक दक्षताओं का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं मानसिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

NCERT (2022) द्वारा प्रकाशित राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा में विद्यालयों को केवल शैक्षणिक उपलब्धियों तक सीमित न रखकर विद्यार्थियों में सामाजिक उत्तरदायित्व, नेतृत्व क्षमता, लोकतांत्रिक मूल्यों तथा सहयोगात्मक व्यवहार के विकास पर विशेष बल दिया गया है। अध्ययन में यह भी रेखांकित किया गया कि सहपाठ्य गतिविधियाँ, सामुदायिक सहभागिता एवं अनुभवात्मक अधिगम सामाजिक परिपक्वता को सुदृढ़ बनाते हैं।

UNESCO (2021) ने अपनी वैश्विक शिक्षा रिपोर्ट में सामाजिक–भावनात्मक अधिगम को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अनिवार्य घटक माना है। रिपोर्ट के अनुसार सहानुभूति, सहयोग, संवाद–कौशल, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा विविधता के प्रति सम्मान जैसी सामाजिक दक्षताओं का विकास विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होता है।

## समस्या कथन

"माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन"

## शोध में प्रयुक्त शब्दों को परिभाषीकरण

- **माध्यमिक विद्यालय**

  माध्यमिक स्तर का तात्पर्य उस विद्यालयी संस्था से है जहां कक्षा 9 से 12 तक छात्रों हेतु शिक्षण कार्य किया जाता है। माध्यमिक विद्यालयों को दो भागों प्रथम निम्न माध्यमिक विद्यालय कक्षा 9 और 10 के रूप में जाना जाता है, द्वितीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कक्षा 11 और 12 के रुप में जाना जाता है।

- **सामाजिक परिपक्वता**

  सामाजिक परिपक्वता का तात्पर्य व्यक्ति की समाज में उचित व्यवहार करने, सामाजिक मूल्यों को समझने, दूसरों के साथ सहयोगात्मक संबंध स्थापित करने और समाज के नियमों एवं अपेक्षाओं के अनुरूप अपने आचरण को ढालने की क्षमता से है। यह परिपक्वता यह दर्शाती है कि कोई व्यक्ति सामाजिक रूप से कितना जिम्मेदार, आत्मनिर्भर और संवेदनशील है।

## शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. जौनपुर जिले के शहरी एवं ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. जौनपुर जिले के माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्र एवं छात्रा के सामाजिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. जौनपुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

## शोध अध्ययन की परिकल्पना

$H_0$1. जौनपुर जिले के शहरी एवं ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक परिपक्वता में कोई अंतर नहीं है।

$H_0$2. जौनपुर जिले के माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्र एवं छात्रा के सामाजिक परिपक्वता में कोई अंतर नहीं है।

H03. जौनपुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक परिपक्वता में कोई अंतर नहीं है।

## अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा वर्णनात्मक अनुसन्धान के अंतर्गत आने वाली सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। शिक्षा एवं मनोविज्ञान से संबंधित विषयों में अनुसंधान की सबसे अच्छी विधि वर्णनात्मक अनुसंधान होती है और यह बड़े व्यापक रूप में व्यवहार में आया है।

## अध्ययन की जनसंख्या

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा अपने शोध अध्ययन की समस्या के अनुरूप जौनपुर जनपद में माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 11वीं के विद्यार्थियों को शोध की जनसंख्या के रूप में चुना गया है।

## न्यादर्श एवं न्यादर्शन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा प्रतिदर्श के रूप में जौनपुर जनपद के नगर क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले 20 माध्यमिक विद्यालय एवं ग्रामीण क्षेत्र से 20 माध्यमिक विद्यालय का चयन सरल यादृच्छिक प्रतिदर्श विधि द्वारा किया गया। इस प्रकार चुने गए शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत 800 विद्यार्थियों को स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्श चयन विधि द्वारा चुना गया है।

## शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता के मापन हेतु डॉ. वी. पी. शर्मा, डॉ. प्रभा शुक्ला एवं डॉ. किरण शुक्ला द्वारा निर्मित सामाजिक दक्षता मापनी का प्रयोग किया गया। यह हिन्दी भाषा की मानकीकृत मापनी है, जो व्यक्ति की सामाजिक नियमों के पालन, सहयोग, संवाद, सामाजिक समायोजन, उत्तरदायित्व तथा सामाजिक समस्याओं के समाधान की क्षमता का आकलन करती है। यह मापनी मुख्यतः 14 वर्ष या उससे अधिक आयु के माध्यमिक, उच्च माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त है। मापनी में कुल 50 कथन हैं, जिनमें सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार के कथन सम्मिलित हैं। प्रत्येक कथन के लिए पाँच विकल्प अत्यधिक सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत एवं अत्यधिक असहमत दिए गए हैं। मापनी की विश्वसनीयता (परीक्षण–पुनर्परीक्षण) 0.56 तथा वैधता 0.72 है। शोधकर्ता द्वारा विद्यार्थियों को आवश्यक निर्देश देकर मापनी का प्रशासन किया गया तथा उत्तरों की गोपनीयता सुनिश्चित की गई।

## शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय तकनीक

प्रस्तुत शोध अध्ययन में एकत्रित आंकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात परीक्षण का प्रयोग किया गया हैं।

## आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

$H_0$1. जौनपुर जिले के शहरी एवं ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक परिपक्वता में कोई अंतर नहीं है।

**तालिका 1. जौनपुर जिले के शहरी एवं ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक परिपक्वता का मध्य, मानक विचलन एवं क्रान्तिक–अनुपात :**

| क्षेत्र | संख्या | माध्य | मानक विचलन | स्वतंत्रता मात्रा | क्रान्तिक –अनुपात | टिप्पणी |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शहरी | 400 | 182.09 | 18.395 | 798 | 3.576 | 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर है। |
| ग्रामीण | 400 | 186.42 | 15.747 | | | |

तालिका 1 में शहरी एवं ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का विवरण प्रस्तुत किया गया है। जिसमें शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों का सामाजिक परिपक्वता

का माध्य 182.09 तथा मानक विचलन 18.395 प्राप्त हुआ, जबकि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों का सामाजिक परिपक्वता का माध्य 186.42 तथा मानक विचलन 15.747 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्य सामाजिक परिपक्वता में अंतर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए टी–परीक्षण (C–R Test) का प्रयोग किया गया, जिसका मान 3.576 प्राप्त हुआ है तथा स्वतंत्रता मात्रा (df) 798 है। सार्थकता के 0.05 स्तर पर df = 798 के लिए सारणीबद्ध टी–मान लगभग 1.96 होता है। जबकि प्राप्त टी–मान सारणी मान से अधिक है, इसलिए शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जौनपुर जिले के शहरी एवं ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता में 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया।

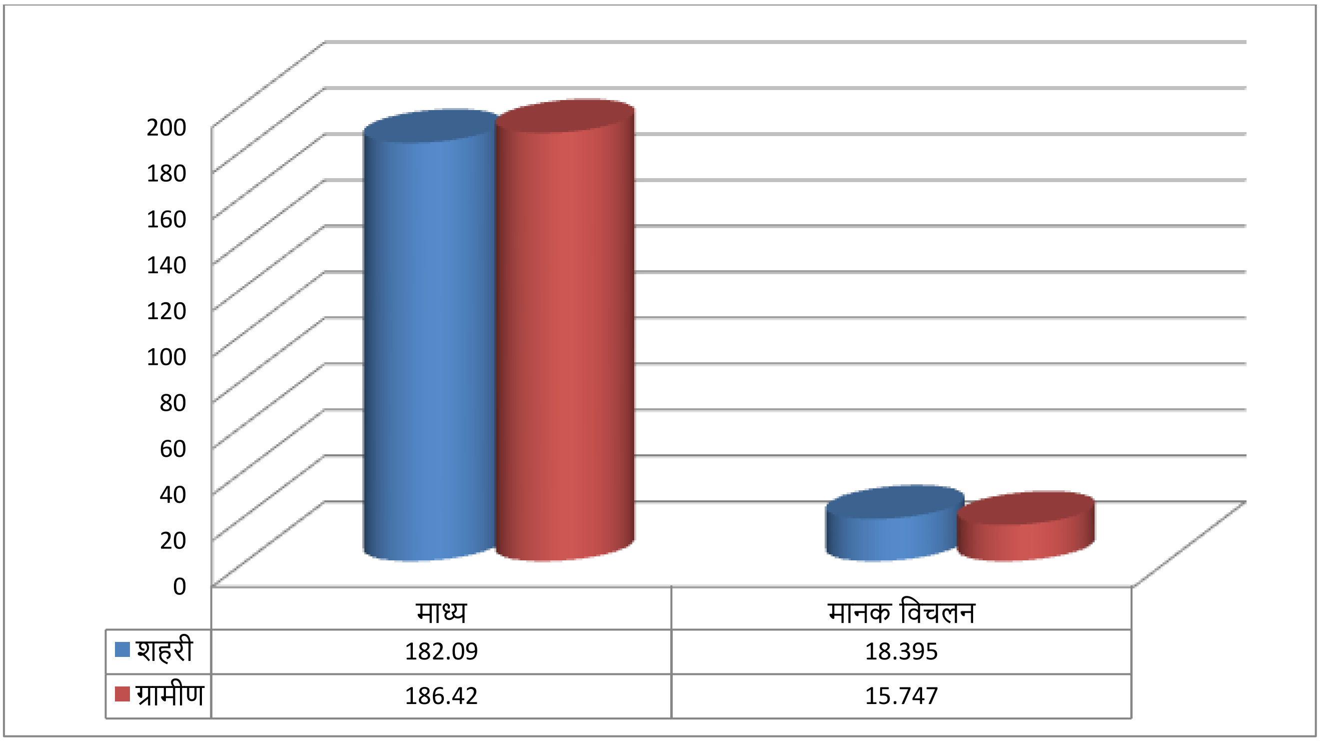


$H_0$2. जौनपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्रा के सामाजिक परिपक्वता में कोई अंतर नहीं है।

**तालिका 2. जौनपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्रा के सामाजिक परिपक्वता का मध्य, मानक विचलन एवं क्रान्तिक–अनुपात :**

| लिंग | संख्या | माध्य | मानक विचलन | स्वतंत्रता मात्रा | क्रान्तिक –अनुपात | टिप्पणी |
|---|---|---|---|---|---|---|
| छात्र | 400 | 183.90 | 18.037 | 798 | 0.590 | 0.05 स्तर पर कोई सार्थक अंतर नहीं है। |
| छात्रा | 400 | 184.62 | 16.436 | | | |

तालिका 2 में माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्रा के  सामाजिक परिपक्वता का विवरण प्रस्तुत किया गया है। जिसमें छात्रों के सामाजिक परिपक्वता का माध्य 183.90 तथा मानक विचलन 18.037 प्राप्त हुआ, जबकि छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता का माध्य 184.62 तथा मानक विचलन 16.436 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्य सामाजिक परिपक्वता में अंतर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए टी–परीक्षण (C–R Test) का प्रयोग किया गया, जिसका मान 0.590 प्राप्त हुआ है तथा स्वतंत्रता मात्रा (df) 798 है। सार्थकता के 0.05 स्तर पर df = 798 के लिए सारणीबद्ध टी–मान लगभग 1.96 होता है। जबकि प्राप्त t–मान सारणी मान से कम है, इसलिए शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जौनपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्रा के सामाजिक परिपक्वता में 0.05 स्तर पर कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

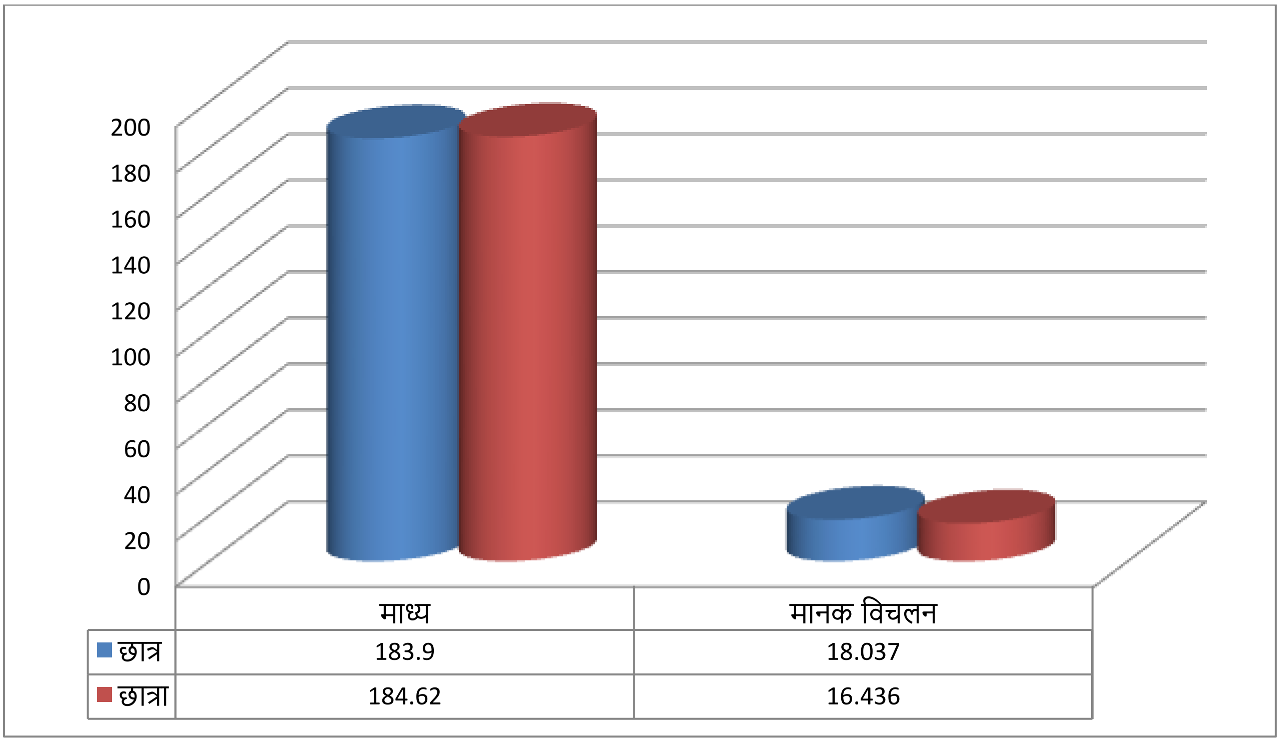

$H_0$3. जौनपुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक परिपक्वता में कोई अंतर नहीं है।

**तालिका 4.3 जौनपुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक परिपक्वता का मध्य, मानक विचलन एवं क्रान्तिक–अनुपात :**

| विद्यालय | संख्या | माध्य | मानक विचलन | स्वतंत्रता मात्रा | क्रान्तिक –अनुपात | टिप्पणी |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शासकीय | 200 | 180.85 | 19.609 | 798 | 1.392 | 0.05 स्तर पर कोई सार्थक अंतर नहीं है। |
| अशासकीय | 200 | 183.34 | 17.054 | | | |

तालिका 4.3 में जौनपुर जिले के शहरी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्रा के सामाजिक परिपक्वता का विवरण प्रस्तुत किया गया है। जिसमें शहरी क्षेत्र के छात्रों के सामाजिक परिपक्वता का माध्य 180.85 तथा मानक विचलन 19.609 प्राप्त हुआ, जबकि शहरी क्षेत्र की छात्राओं के सामाजिक परिपक्वता का माध्य 183.34 तथा मानक विचलन 17.054 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्य सामाजिक परिपक्वता में अंतर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए टी–परीक्षण (C–R Test) का प्रयोग किया गया, जिसका मान 1.392 प्राप्त हुआ है तथा स्वतंत्रता मात्रा (df) 398 है। सार्थकता के 0.05 स्तर पर df = 398 के लिए सारणीबद्ध टी–मान लगभग 1.96 होता है। जबकि प्राप्त टी–मान सारणी मान से कम है, इसलिए शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जौनपुर जिले के शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्रा की सामाजिक परिपक्वता में 0.05 स्तर पर कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

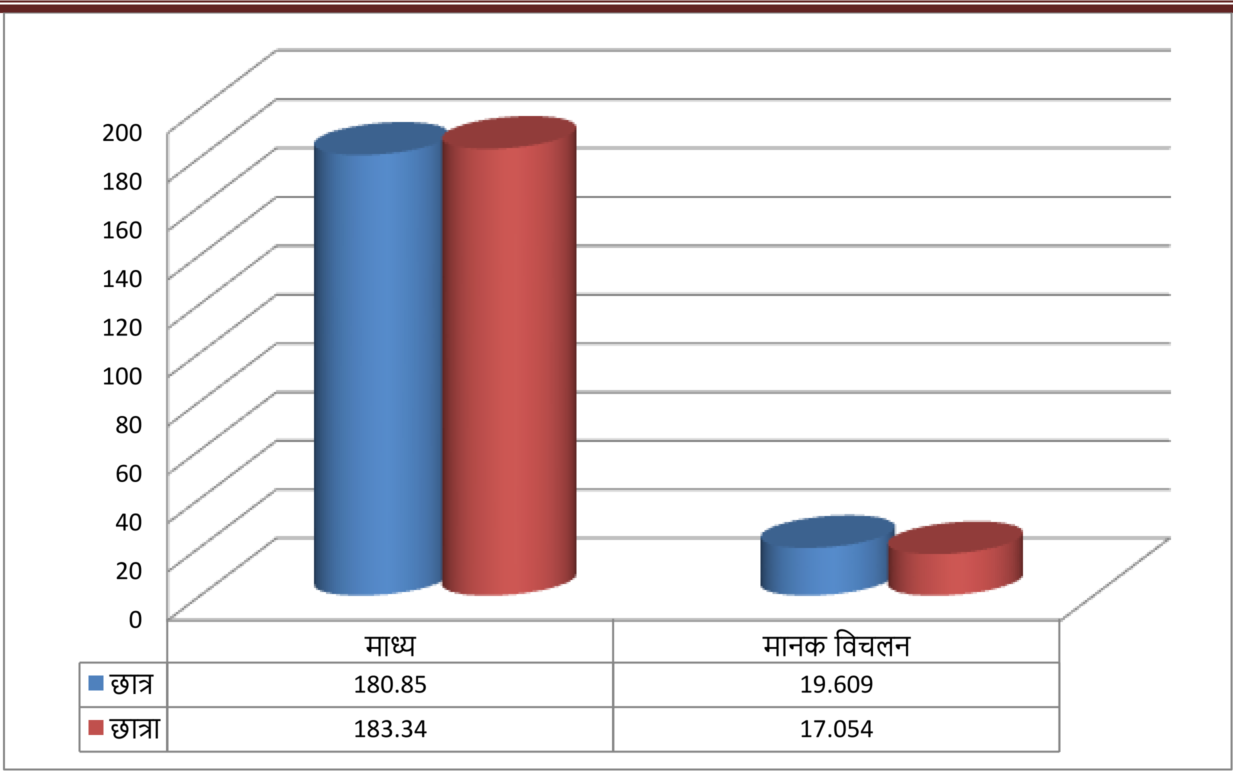


| | माध्य | मानक विचलन |
|---|---|---|
| छात्र | 180.85 | 19.609 |
| छात्रा | 183.34 | 17.054 |

## निष्कर्ष

वर्तमान शोध में प्राप्त निष्कर्ष निम्न प्रकार से है–

1. जौनपुर जिले के माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक पायी गयी है।
2. जौनपुर जिले के माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्र एवं छात्रा की सामाजिक परिपक्वता एक सामान पायी गयी है।
3. जौनपुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता एक सामान पायी गयी है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अनास्तासी, एनी एवं उर्बीना, सुजाना. (1997). मनोवैज्ञानिक परीक्षण। अपर सैडल रिवर, न्यू जर्सी: प्रेंटिस हॉल।
2. बेस्ट, जॉन डब्ल्यू. एवं कान, जेम्स वी. (2019). शिक्षा में अनुसंधान। नई दिल्ली: पियर्सन एजुकेशन।
3. क्रोनबाख, ली जे. (1990). मनोवैज्ञानिक परीक्षण के सिद्धान्त। न्यूयॉर्क: हार्पर एंड रो।

4. कोठारी, सी. आर. (2019). शोध प्रविधिः विधियाँ एवं तकनीकें। नई दिल्लीः न्यू एज इंटरनेशनल पब्लिशर्स।
5. गैरेट, एच. ई. (2018). मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी। नई दिल्लीः पैरागन इंटरनेशनल पब्लिशर्स।
6. दहिया, आर. (2025). इंटरनेट उपयोग करने वाले किशोरों की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन. अप्रकाशित शोध प्रबंध, शिक्षा संकाय।
7. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT). (2022). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (National Curriculum Framework 2022). नई दिल्लीः NCERT.
8. Organisation for Economic Co&operation and Development (OECD). (2023). Survey on Social and Emotional Skills 2023: Learning for Tomorrow. Paris OECD Publishing.
9. श्रीवास्तव, एस. (2024). ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की सामाजिक परिपक्वता : एक तुलनात्मक समीक्षा. शिक्षा एवं मनोविज्ञान शोध पत्रिका, 18(2), 45–56.
10. शर्मा, वी. पी., शुक्ला, प्रभा एवं शुक्ला, किरण। सामाजिक दक्षता मापनी – निर्देशिका एवं मैनुअल। आगराः नेशनल साइकोलॉजिकल कॉर्पोरेशन।
11. सिंह, अरुण कुमार. (2017). व्यवहार विज्ञानों में परीक्षण, मापन एवं शोध विधियाँ। पटनाः भारती भवन।
12. UNESCO (2021). Reimagining Our Futures Together: . New Social Contract for Education. Paris: United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization.
13. यादव, ए., एवं सिंह, पी. (2025). किशोरों की सामाजिक परिपक्वता पर सहपाठी समूह के प्रभाव का अध्ययन. भारतीय शिक्षा अनुसंधान पत्रिका, 14(1), 62–71.